International Journal of Multidisciplinary Research and Development 2015; 1(7): 451-452

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

IJMRD 2015; 1(7): 451-452
www.allsubjectjournal.com
Received: 11-10-2014
Accepted: 26-11-2014
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979

डॉ. प्रज्ञा अग्रवाल
वरिष्ठ प्रवक्ता, हिन्दू कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, सोनीपत

Correspondence
डॉ. प्रज्ञा अग्रवाल
वरिष्ठ प्रवक्ता, हिन्दू कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, सोनीपत

मातृभाषा बनाम अंग्रेजी - शिक्षा की भाषा - एक विवेचना

डॉ. प्रज्ञा अग्रवाल

सार
बीते कुछ दशको में शिक्षा जगत में इस बात ने काफी जोर पकड़ा है की बाल्यावस्था से ही बच्चो को अंग्रेजी भाषा के ज्ञान में प्रवीण बनाना चाहिए । अगर यह मान भी लें कि आज के वैश्वीकरण के युग में अंग्रेजी भाषा का ज्ञान आवश्यक है तो यह भी तो एक अकाट्य सत्य है की बालमनोवैज्ञनिको व समाजशास्त्रियों की राय में बच्चो की आरंभिक शिक्षा परिवेश की भाषा या यूँ कहें मातृभाषा में दी जानी चाहिए, क्योंकि इसका सीधा सम्भन्ध उनके व्यकितत्व के विकास से है। प्रस्तुत लेख में इस बहस को एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किये जाने का प्रयास है।

कुंजी शब्द: मातृभाषा, अंग्रेजी, शिक्षा, भाषा, विवेचना

परिचय
शिक्षा के माध्यम की भाषा क्या है - यह बहस बहुत पुरानी बहस है लेकिन आज भी उतनी ही जीवंत है जितनी लगभग 65 वर्ष पहले। आज तक यह दो बिन्दुओं के इर्द - गिर्द ही घूमती आई है - एक पक्ष मानता है की मातृभाषा का ज्ञान और शिक्षा के माध्यम के रूप में उसका उपयोग किसी व्यक्ति की राजनितिक और सांस्कृतिक चेतना के विकास के लिए आवश्यक है वहीँ दूसरा पक्ष मानता है की बदलती दुनिया की आवश्यकताओं के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर चलने के लिए मातृभाषा के प्रति हमें अपना संकुचित दृष्टिकोण बदलना होगा। इसके लिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान आवश्यक है।
वास्तव में सिर्फ अंग्रेजी ही नहीं, दुनिया की किसी भी भाषा के प्रति हमारा दृष्टिकोण संकुचित नहीं होना चाहिए। ज्यादा से ज्यादा भाषाओँ का ज्ञान हमें सांस्कृतिक व सामाजिक तौर पर संपन्न बनता है लेकिन किसी एक भाषा का विकास दूसरी भाषा की कीमत पर नहीं होना चाहिए।

शिक्षा में मातृभाषा की भूमिका:
शिक्षण - अधिग़म की प्रक्रिया में मातृभाषा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि भाषा की आवश्यकता बच्चा तभी महसूस करता है जब वह चारों और के वातावरण, प्रकृति व लोगों के साथ एक सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है। यह सम्बन्ध केवल और केवल मातृभाषा में ही सहज महसूस कर सकता है। इस दिशा में हुए अनेक शोध इस ओर इंगित करते है की स्कूल में प्रवेश लेते समय बच्चा अपने मस्तिष्क में अनेक अवधारणाएँ लेकर आता है जो की मातृभाषा में ही होती है। यदि इस समय उसे उसी भाषा में शिक्षा दी जाये तो उसमे विषय के प्रति गहरी समझ होती है। अपनी मातृभाषा में वह अपनी रचनात्मक व सर्जनात्मक क्षमता का विकास कर सकता है। क्योंकि अगर उसे ऐसा करने से रोका तो धीरे -धीरे उनका मानशिक व रचनातमक विकास अवरुद्ध हो जाता है। यदि उसे मातृभाषा में स्वयम को अभिव्यक्त करने का मौका दिया जाये तो इसकी चिंतन प्रक्रिया व्यापक व गहरी हो जाती है। यही शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उदेश्ये है। इस तथ्य के साथ यह देखना ओर भी महत्वपूर्ण है की मातृभाषा पर पकड़ होने के बाद अन्य भाषाओ को सीखने की क्षमता का भी विकास होता है।
इस के साथ यह भी समझना आवश्यक है कि मातृभाषा के उपयोग या शिक्षा के माध्यम के तौर पर इसके इस्तेमाल का अर्थ ये नहीं है कि कोई व्यक्ति बाकि भाषाओँ के ज्ञान व उनमे हो रहै विमर्श से अनजान रहै। मातृभाषा तो वास्तव में बुनियाद तैयार करती है जिस पर कोई भी व्यक्ति ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों व संस्थाओं के साथ ज्यादा सहज महसूस कर सके। प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु ने अपनी माँ से पेड़ - पौधों के बारे में किस्से कहानी सुने व उनमे वनस्पति जगत के अध्ययन के प्रति रुझान पैदा हुआ। हिंदी के सुप्रशिद्ध साहित्यकार 'अज्ञेय' हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओँ पर समान पकड़ रखते थे।

आधुनिक युग में भाषा: एक विवेचना
आधुनिक युग सुचना क्रांति का युग है। डिजिटल क्रांति व कंप्यूटर तकनीक ने हमारे जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। इस क्रांति की जड़ में अंग्रेजी शिक्षा का दबदबा रहा है इस दबदबे ओर वर्चस्व ने भारत जैसी प्राचीन सभ्यताओं के सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनितिक संस्थाओं के वर्चस्व पर कुठाराघात किया है। अंग्रेजी भाषा की बढ़ती हुई स्वीकार्यता इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

तर्क यह दिया जाता है की आज अंग्रेजी के बिना कोई भी समाज आधुनिक युग के साथ कदम से कदम मिलकर नहीं चल सकता। खास तौर पर भूमंडलीकरण के दौर में इस सोच ने अपने पांव तेजी से पसारे है।

इस वैश्वीकरण के दौर में यह समझना भी आवश्यक है की जिन देशो ने मातृभाषा के महत्व को पहचाना, उन्होंने देश के विकास के हर पक्ष पर अपने मानक स्थापित किये। चीन, जापान, फ्रांस, जर्मनी जेसे देश इसके प्रत्यक्ष उदहारण है। अमेरिका, कनाडा जेसे देशों में भी जहाँ अंग्रेजी बोली जाती है, बच्चे को उसकी मातृभाषा में शिक्षण देने का प्रयास किया जाता है।

यूनेस्को जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्था ने भी मातृभाषा के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण पक्ष रखा है। 1999 में यूनेस्को ने 21 फ़रवरी को 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा' दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव पारित किया था ताकि मातृभाषाओं का उचित संरक्षण व विकास किया जा सके। इस में कहा गया है:

"स्वत: सिद्ध है की बच्चे की शिक्षा का सबसे बढ़िया मातृभाषा है। मनोवैज्ञानिक आधार पर यह सार्थक चिन्हो की ऐसी प्रणाली है जो संप्रेषण व् समझ के लिए उसके दिमाग में स्वचालित रूप में काम करती है, सामाजिक आधार पर जिन समूह के सदस्यों से उसका सम्बन्ध होता है उसके साथ एकात्मक होने का साधन है, शैक्षिक आधार पर वह मातृभाषा के माध्यम से एक अनजाने माध्यम की अपेक्षा तेजी से सीखता है।"

अतः कहा जा सकता है की मातृभाषा की भूमिका सिर्फ करियर बना देने तक या रोजगार प्रदान करने तक ही सीमित नहीं होती। यह तो ज्ञान का द्वार है जो भविष्ये का रास्ता तय करती है। वास्विकता तो यह है की आज भारत में हिंदी समेत सभी लोक भाषाएं केवल बोलचाल की भाषा के दायरे से बाहर निकलकर बहुत आगे बढ़ गई है। अत: भाषा पर वाद-विवाद समाप्त कर भाषाओ को ज्ञान के प्रचार प्रसार का साधन बनाकर 'ज्ञान आधारित समाज' की स्थापना के सपने को साकार करना चाहिए।

सन्दर्भ सूचि:

1. सत्यपाल रुहैला: भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र
2. ओटावे: एजुकेशन एंड सोसाइटी; न्यूयार्क, मैकमिलन
3. नायक.जे.पी. : एलीमेंट्री इन इंडिया-ए प्रॉमिस तो कीप